UNIT → V

Ques:- Description of below mentioned Thaats in and Chogun Layakaries

→ Jhaptaal

→ Dadra

→ Ektaal

→ Including Previous Semester Taals.

1. झपताल

मात्राएँ - 10

विभाग - 4

ताली - 1, 3, 8 पर

खाली - 6 पर

2020-4-25 19:05

Scanned with CamScanner

चिन्ह	X		2			0		3		
मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल	धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
दुगुन	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	तीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना
चौगुन	धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना	धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना

2. दादरा ताल

मात्राएं - 6

विभाग - 2

ताली - 1 पर

खाली - 4 पर

चिन्ह	X			0		
मात्राएं	1	2	3	4	5	6
बोल	धा	धी	ना	धा	ती	ना
दुगुण	धाधी	नाधा	तीना	धाधी	नाधा	तीना
चुगुण	धाधीनाधा	तीनाधाधी	धाधातीना	धाधीनाधा	तीनाधाधी	धाधातीना

2020-4-25 19:06

Scanned with CamScanner

3. एक ताल

मात्राएँ - 12

विभाग - 6

ताली - 1, 5, 9, 11 पर

खाली - 3, 7 पर

2020-4-25 19:06

Scanned with CamScanner

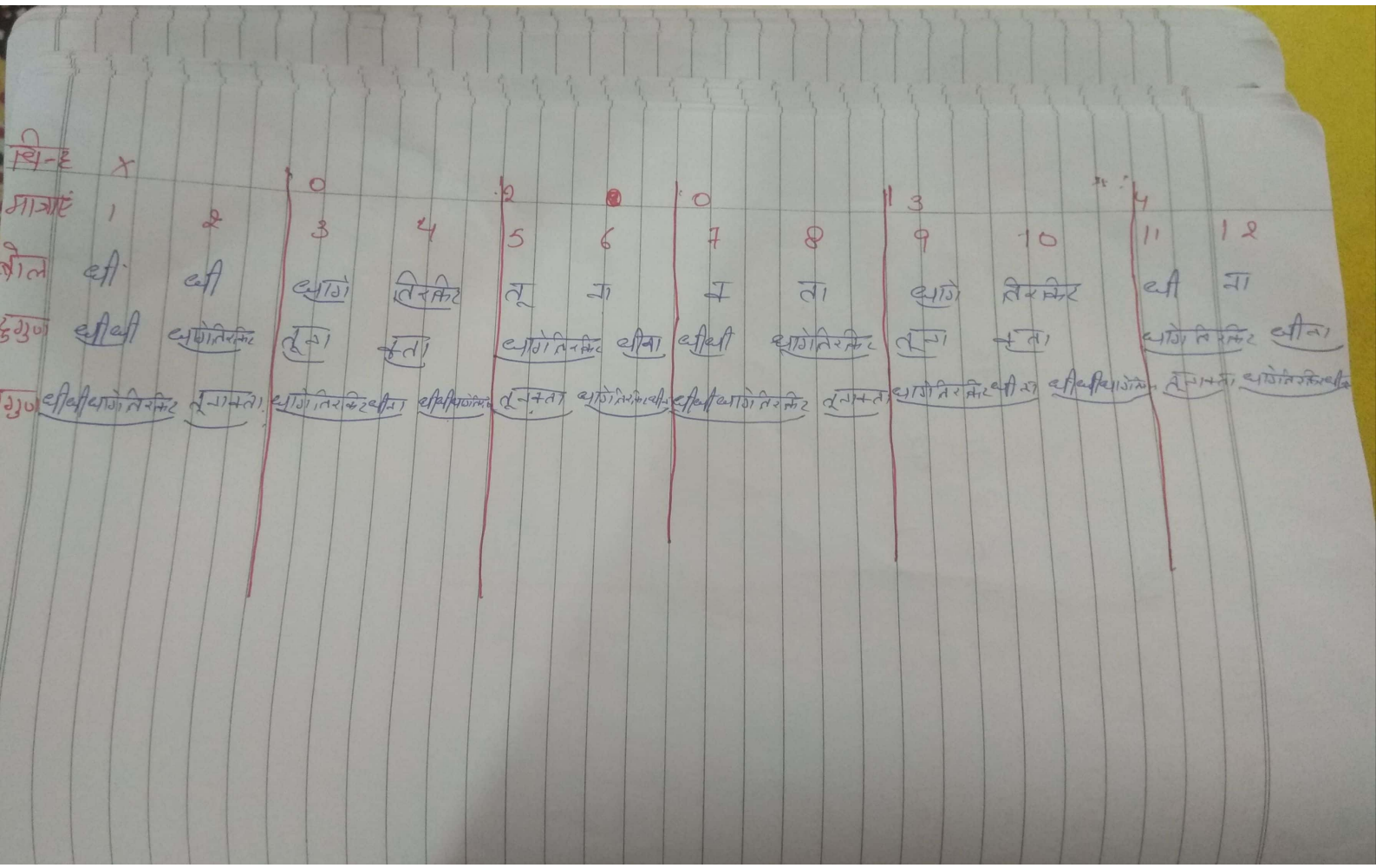

Scanned with CamScanner

Previous Semester Taals

कहरवा ताल

मात्राएँ - 8

विभाग - 2

ताली - 1 पर

खाली - 5 पर

पि-ट	x				o			
मात्राएँ	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल	धा	गे	ना	ती	न	क	धी	ना
दुगुण	धागे	नाती	नक	धीना	धागे	नाती	नक	धीना
चुगुण	धागेनाति	नकधीना	धागेनाति	नकधीना	धागेनाती	नकधीना	धागेनाति	नकधीना

Scanned with CamScanner

तीनताल

मात्राएँ – 16

विभाग – 4

ताली – 1, 5, 13 पर

खाली – 9 पर

2020-4-25 19:08

Scanned with CamScan

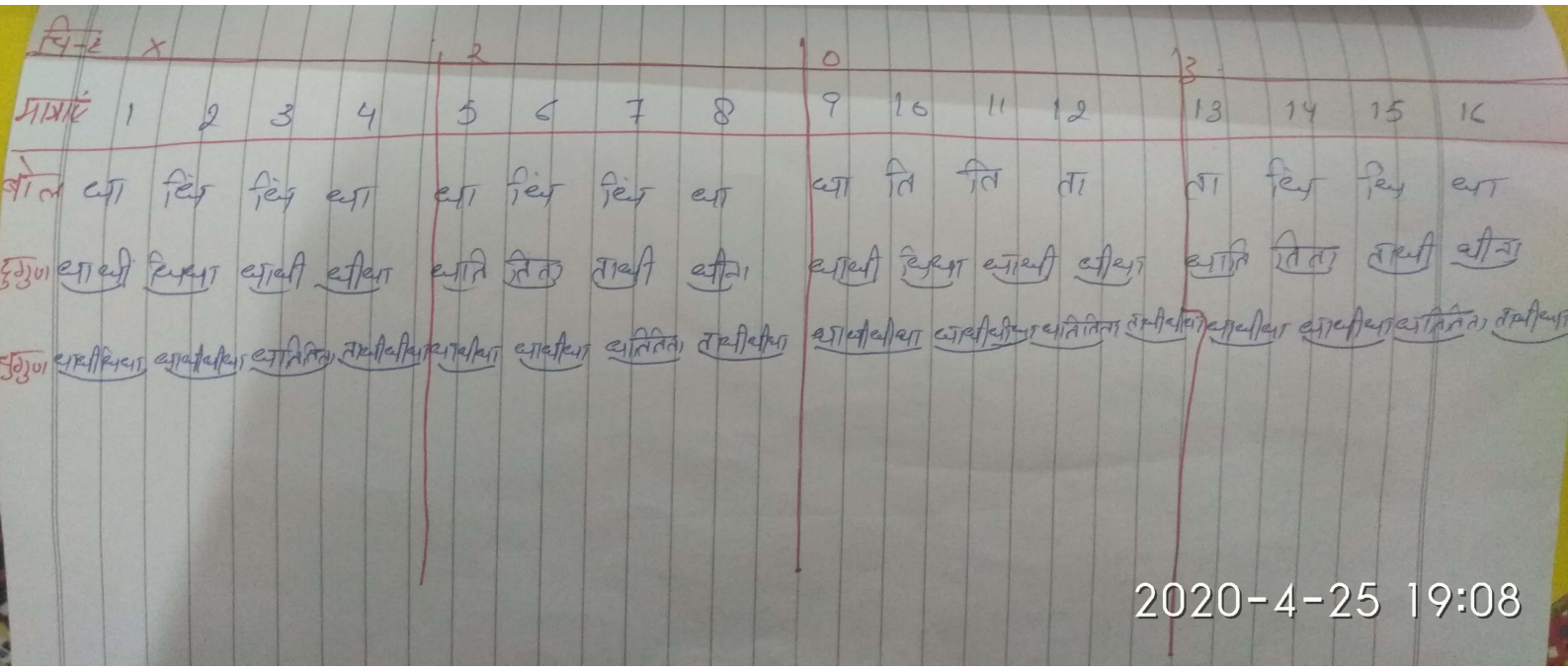

Scanned with CamScanner

Ques:2 Writing and Completing the Alankars

→ सरेसरेग, रेगरेगम, गमगमप, ——, ——, ——,

→ सरेगम, रेगमप, गमपध, ——, ——, ——,

→ सरेस, रेगरे, गरेग, ——, ——, ——,

→ सरे-सरे-सरेग, रेग-रेग-रेगम, ——, ——, ——,

→ सरेग, रेगम, गमप, ——, ——, ——, ——,

→ सरेमग, रेगपम, गमधप, ——, ——, ——, ——,

→ सगरेम, रेमगप, गपमध, ——, ——, ——, ——,

→ सरेगरेस, रेगमगरे, गमपमग, ——, ——, ——, ——,

→ सरेगमप, रेगमपध गमपधनी, ——, ——, ——,

→ सस, रेरे गग, ——, ——, ——, ——,

2020-4-25 19:09

Scanned with CamScanner

Ques:1 Writing description of the prescribed Raags
Bharav, Vrindavani Sarang, Jounpuri

→ **राग भैरव परिचय** :- राग - भैरव इसमें रे, ध स्वर कोमल है। इस राग की जाति सम्पूर्ण - सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर धैवत, सम्वादी स्वर, ऋषभ। इस राग का समय प्रातः काल है। राग भैरव की पकड़ ध प ग म रे रे स। इस राग का थाट भैरव है।

आरोह - स रे ग म प ध नि सं.

अवरोह :- सं नि ध प म ग रे स

→ **राग वृन्दावनी सारंग** :- राग - वृन्दावनी सारंग इसमें ग, ध स्वर वर्जित है। राग वृन्दावनी सारंग का थाट काफी है। इसकी जाती ओड़व - ओड़व है राग वृन्दावनी सारंग का वादी स्वर रे और संवादी स्वर पंचम है। इसमे दोनो निषाद प्रयोग होते है। राग वृन्दावनी सारंग का समय मध्याहन है। इसका समप्रकृति राग - सूर मल्हार है। राग वृन्दावनी सारंग की पकड़ रे म प नि प, म रे नि सा

आरोह - नि स रे म प नि सां ।

अवरोह - सां नि प, म रे सा

2020-4-25 19:09

Scanned with CamScan

→ राग - जौनपुरी :→ राग जौनपुरी का था[ट]

आसावरी है। इसका वादी स्वर ध और सम्वादी स्वर ग है। इसकी जाति षाड़व-सम्[पूर्ण] है, इसका समय दिन का दूसरा प्रहर है। राग जौनपुरी का वर्जित स्वर आरोह में ग है इसके न्यास के स्वर हैं सा और प। राग जौनपुरी में गान्धार, धैवत और निषाद स्वर कोमल है। इसका समप्रकृतिक राग आसावरी राग जौनपुरी की पकड़ रे म प, नी ध प, [म] प ग ऽ रे स।

आरोह → स रे म प ध नि सं

अवरोह - सां नि ध प, म ग रे स

2020-4-25 19:10

Scanned with CamScanner

16. खटका तथा मुर्की :→ खटका तथा मुर्की गमक के ही प्रकार हैं, जिन्हे हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति में स्वतन्त्र नाम दे दिये गये हैं। खटका और मुर्की स्फुरित गमक (प्राचीन गमक का एक प्रकार) के अन्तर्गत आते हैं। गायन तथा वादन में जब दो स्वरों को झटके के साथ गाते अथवा बजाते हैं तब वह खटका कहलाता है। उदाहरण के लिए सा (सा) - सा सा रे नि सा अथवा स रे नी सा।

जब दो या दो से अधिक स्वरों को खटके के साथ कहा जाता है तब मुर्की होती है।

रे सारेसा रेसासारे

जैसे :→ नी अथवा नी नी आदि।

खटके और मुर्की का प्रयोग अधिकतर ठुमरी, दादरा, टप्पा आदि में सुनने को मिलता है।

17. अलंकार :→ कुछ विशेष नियमों से बँधे हुए स्वर-समुदाय को अलंकार या पल्टा कहते हैं। 'संगीत-रत्नाकर' नामक ग्रन्थ में अलंकार की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है। किसी विशिष्ट वर्ण-समुदाय अथवा क्रमानुसार तथा नियमबद्ध स्वर-समुदायों को अलंकार कहते हैं, अलंकार को पल्टा भी कहकर पुकारते हैं। इनमे एक क्रम रहता है जो स्वरों को चार वर्णों में अर्थात स्थायी, आरोही, अवरोही या संचारी में विभाजित करता है। अलंकार के

2020-4-25 18:58

Scanned with CamScanner